

DPN 6058

Title : स्कन्दपुराण(काशीखण्ड) SKANDA PURANA (KASHI KHANDA)

Run. No. 6749

Cat. No. 78

Micro. No.

Subject Purana पुराण

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 41.5 x 10.7

Folios 1-60

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / 1-20

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान प्रमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Pasupatiman Pramaaya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

fol. 58 b : इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे ध्रुवाख्यानं नाम
विंशतितमोऽध्यायः ॥२०॥

समाधि वाक्य Colophons

1151

3A

शक्तिस्त्रुस सुगणे काशी खड्डे विन्दुने वर्णिन नाम पादोद्भास्य 1151

6A

" " " " " सत्पत्न्योका कान्ति वर्णिन " इन्दुपद्म 1151

9B

" " " " " " उगास्त्रास्त्रा " " इन्दुपद्म 1151

12B

" " " " " " लोपामुद्रा पाणिन " " इन्दुपद्म 1151

16A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

18A

" " " " " " सत्पत्न्योका कान्ति " " इन्दुपद्म 1151

21B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

24B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

27A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

30B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

32A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

37B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

42A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

43B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

45B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

48A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

52B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

53B

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

56A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

58A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

60A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

62A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

64A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

66A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

68A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

70A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

72A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

74A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

76A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

78A

" " " " " " सप्तविंशतस्तुत " " इन्दुपद्म 1151

गणसहस्रनाम अध्याय

संस्कृत

गणसहस्रनाम ४०
योगकर्म ४१
कालज्ञान ४२

[illegible]

वैश्वदेवः यनमेघमनागः १ धुकनालो १ यला १ के १ यला १ नादि १ बहि १ याग १ ह्यके १ निवा १ नमा १ कय १ मवादि १ नानी १ या १ इहा १ क १ क्रि १ निवा १ सम १ कता १ यज १ मानं १ कल १ म्बक १ कय १ म्बके १ नम १ नृ १ शि १
मन १ त्वं १ नि १ खने १ नि १ वना १ जि १ तमा १ ना १ जा १ दने १ ध १ म १ दने १ म १ दने १ नि १ व १ का १ मि १ ना १ मा १ ग १ ट १ ग १ ट १ दे १ न १ दे १ य १ इ १ क १ टी १ वृ १ त १ म १ क १ ट १ ज १ सु १ व १ के १ क १ न १ म १ धि १ छि १ त १ व १ के १ नि १ व १ क १ न १ म १ दे १ क १ टी १ ने १ ध १ क १ न १ के १ य १ क १ न १ म्ब १ के १
स १ रु १ म १ क १ त्र १ ज १ ग १ न १ म १ धि १ य १ य १ न १ के १ क १ ने १ नी १ ना १ जि १ त १ मि १ वा १ दी १ ये १ ना १ ज १ य १ म्ब १ क १ वा १ न १ के १ स १ य १ य १ ग १ ल १ म १ ली १ रि १ थ १ जि १ त १ य १ द्वा १ क १ त्रि १ य १ क १ वि १ ज्ञ १ ल १ द १ ले १ न १ दे १ क १ वि १ न १ का १ न १ क १ त १ के १ क १ ग १ मा १ ले १ न १ क १ मा १ ले १
ग १ र १ मा १ न १ क १ वि १ त १ क १ वि १ त १ क १ क १ न १ व १ न १ जी १ वे १ ध १ य १ र्ग १ जी १ वे १ धि १ ना १ जि १ त १ म १ नि १ न्द १ क १ न्द १ दी १ रि १ थ १ क १ न १ ले १ क १ न १ ज १ ल १ य १ म १ ग १ ल १ न १ धू १ क १ म १ म १ दे १ ना १ म १ य १ ध १ र्ग १ रु १ त्रि १ म १ स १ रु १ म १ क १ म १ क १ म १ का १ रि १ न १ दे १ य १ न १ मि १ वा १ नि १ ग १
मा १ स १ क १ र्क १ ना १ न १ दे १ ने १ व १ ज १ ने १ वी १ क १ मा १ न १ व १ त १ ना १ लि १ क १ ने १ स १ य १ र्क १ ने १ ध १ र १ न १ मि १ वा १ म्ब १ न ॥ अ १ म १ न्द १ यि १ न्द १ म १ दे १ ध १ म १ न्द १ ने १ का १ वि १ दा १ न १ के १ या १ ट १ ला १ गि १ रु १ ली १ घा १ १ सा १ ख १ ट १ क १ न १ ट १ के १ उ १ द १ ले १ ध १
यि १ म १ न १ ले १ न १ न १ ले १ न १ य १ य १ के १ व १ क १ ले १ फि १ ल १ के १ थ १ व १ क १िल १ का १ कि १ त १ म १ सु १ क १ म १ अ १ क १ १ य १ के १ ग १ ल १ की १ रि १ दे १ व १ द १ न १ रु १ नि १ ड १ मे १ स १ द १ रु १ ल १ य १ मे १ य १ य १ वृ १ क १ व १ ली १ वि १ ना १ जि १ त १ म १ ग १ ला १ ल १ व १ म १ वि १ द १ क १ ल १ ज १
न १ व १ ना १ वृ १ त १ म १ ज १ म्बा १ सा १ त १ क १ रु १ ली १ ग १ ल १ धी १ य १ के १ वा १ र्ध १ व १ मा १ ग १ र १ न १ ख १ व १ ने १ न १ म्ब १ न १ न १ क १ व १ न्द १ ने १ रु १ नी १ ग १ की १ क १ लि १ का १ न १ ध १ नी १ व १ न १ वि १ रु १ य १ म १ डा १ दा १ व १ ली १ ना १ ग १ व १ ली १ क १ ण १ व १ ली १ ग १ ता १ न १ म १ म १ नि १ क १
य १ धि १ का १ क १ य १ म १ न्द १ य १ ली १ म १ ग १ धि १ न १ म १ ग १ म १ रु १ म १ न १ मा १ ला १ रि १ मा १ ल १ ती १ रि १ न १ ल १ क १ म १ अ १ लि १ क १ ला १ ग १ र्ग १ क १ र्क १ ग १ यी १ न १ नु १ म १ न १ क १ ग १ न १ ना १ ना १ मृ १ ग १ ग १ ण १ की १ न १ ना १ ना १ य १ दि १ वि १ ना १ दि १ त १ मा १ ना १ ना १ स १ वि १ त्म १ न १ म १
त १ य १ ल १ ले १ य १ नि १ ता १ वृ १ त १ उ १ द १ धि १ य १ न १ न १ मी १ य १ नि १ रु १ या १ ग १ त १ नि १ वा १ ना १ ना १ स १ न १ नि १ का १ यि १ ध १ वि १ स १ ण १ ग १ न्द १ या १ वि १ त १ म १ उ १ ल १ रु १ ज १ न १ मि १ वा १ द १ म्ब १ य १ ग १ य १ य १ नि १ त १ रु १ त १ क १ की १ क १ का १ न १ वे १ न १ क १ व १ र्क १ न १

20

16

द्विषदास्यति। अनाथनाथः सर्वार्थविश्वना। आहिगीयता। कर्णमनसि सक्षिप्य। रुचदित्कमसंगयम्। विवदलेनयकोनवर्द्धमानो यत्रामयो। मयुदक्षिणीकृत्वा विवदमवदिताकनः
 सयहर्कगणानूर्नमन्मानावलाधिकम्। रंतिनिधियविष्मादिर्वृक्षसमृद्धकलाः। अनर्कगगनस्यार्कं कृद्विहः। गिखनेत्रिवाकेधिसाहविना। धनकर्तृकनवितकविगु।
 कर्तृकथयत्तुयत्ननयथनाथरुसकनः। निन्त्रवाध्रमध्वनैरुतद्वयवादिनाट। सुभ्रुवद्ववाधीना। यातिनोहरे। विवदगासर्वसंयमकरुसो। दक्षिणयुक्मिषाति। सकलीनः सव
 धीमान् समहाकरितः सय। यावत्सुखगर्कैर्गकाधि। नदगयनिकर्तृविग। गावत्सलक्ष्यः सवर्था। कलनादान्। यथा रंति विनामहा रायं यत्ना। मध्वेष्ठिनायमश्वार्कमागसुत्र
 (०) नदयवाक्य। यथा ॥ **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥**
 मनेः कनेः समध्वयसर्गाधम्मान् कर्तृकामसीस्ति। तमायन्निनीवाधयन्निर्वा। नगेमूकलिमाननामा। रुच्यकर्तृकगवलिदवादीनाम्यवर्तयना। याकायनाक्रमध्वकृ। क्रियाकालविहसुय
 न्। असर्गादिवकेयु। निर्दिगंक्रमसः। स्ति। तमायन्निनीवाधयन्निर्वा। नगेमूकलिमाननामा। रुच्यकर्तृकगवलिदवादीनाम्यवर्तयना। याकायनाक्रमध्वकृ। क्रियाकालविहसुय
 मितः। यानः। कथंजीवयविः। यूनः। मान्नागकेयुसर्ग। यावीमाध्वस्यखणि। तमायामयुक्तागथा। यथा। कलकीविनहादिव। लवहे। लामृगमदवचुवचनवचितामा। ताम्बुलीनागनकोष्ठी
 डाकासुवकसस्त्रीमालवकीवलिदवर्त्ती। ककालीयसुवामुलिमा। मलयानिलनिध्वर्मा। कीनादकवनाम्वनाम्। गिहूटस्वधुनकासी। खवलादिनिगन्धिनीमा। कावली। गागमीगर्वा।

10

6

बालवालाकुकावृणाम्। सध्वद्वत्रवकाजी। काशीकाशीविरुवणाम्। सकामलमहाबाहु। वाविलासमनारुनामा। अयाधिनमहालक्ष्मी। योविमूकसिद्धुणाम्। सुदकादिके। माग। माग
 नाथः। यनम्विवान्। कमन्तावृयाकस्यहलयाहलिकस्यखमानगकनयतागर्नुगता। शून्यवर्जकियतः ॥ **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।**
 ययु। सुदकादिके। माग ॥ **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।** **॥ अनूयवावः।**
 वानविर्किर्नर्दं। मार्गकायिविलययत। नाकवाक्यरुवा। ययः। कर्णनावगिष्यति। पूयमा। नेनिर्द्वस्य। किङ्कनायुविधिवली। याजनानांमहप्रद्वद्वगमद्वयजनायानस्यनिमवाद्धाया
 गिमाविधिवर्गिगः। गगवद्वनिथकालयाद्यदीश्रीरुगादिग। वरुणम्। कनवागयागसन्तायतायित। यथियादाकिंकायाश्च निडामदितलावना। गयिताव्ववीकनसमानयहमम्वत्रम्
 ॥ अहानारुस्वनारावा विगानेवानिगः। कनगा। अर्कगगर्कवरुसः। कः। कालस्त्वयनाकत ॥ वृक्षाणुकिमका। पुवे। लयमय्यतिगल्हथमा। ययायगन्तिनाद्यायि। यविवात्रावृगसुगः। स्त्राहास्व
 अवयवद्वानवर्जितगगीतल ॥ ययः। ययः। क्रियालाया। चकथयुवनययमा। मूयादया। लवर्कनयययाः। सकलाः। क्रियाः। गारियेकुरुर्गाहफिः। सवितागगकावर्णी। विगुयुफादयः। सवर्कालं
 जानकिमूयतः। स्ति। तिसर्गविसर्गर्ण। काले। कवलीवविः। गत्स्यस्यगगिस्सुग। सुमिर्गयुवनययमा। ययगगगगिर्गगगविगुयुफादयः। सवर्कालं
 वरुनीयलयाजातः। कादिगीकमरुजगता। रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥ **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥** **॥ रंतिग्रीष्मदयवाक्य। यथा ॥**

0

CM 5 10 20 25 30 35 40 45

(अ) अस्मिन्निष्ठव्यावृत्तिव्यापकं। कवीकवीयवित्यक्तं भोर्नक्तिष्ठ कितरुयात्। वक्रान्धद्विकारका कानकवक्रमिवास्ति तथैव ० कीमात्रिकामार्गं शुक्लसम्बन्धयत्यहम्। अत्रायत्र
 संपात्र सिन्ध्यात्रयुद्धं गिवशं काकिलः कामला लायेः कलयनकिल काकलीम्। कलिकाली कलयनः कागिल्लु नतिरायन। मृगार्णयद्विष्णुमिल्लं दृष्ट्वा यद्विष्णुमिष्टयम्। अक
 लुयातसं कर्तुं निनिन्दन्निदं। वैमो वनमरुयकि ग० ॥ ४४ ॥ यगवः कागिवासिनः शययान्नयननावृत्तिर्नदवाः सयनर्तुवाः काशीसुः यक्तिरेमु न्या नवर्यस्वर्निलः कविता का
 याताद्वयं नास्ति स्वर्ग्येवातरुयं सहत्। वरकाशीयत्रीवासा मासायवसनादिहिः विविग्वृत्तसङ्कार्यं नायनायनीविधा गणकेर्मर्गकेः काशीयत्यर्दह लयायना गत्यर्द
 नायनयगु आगयक्का यिआगिरिः शवनम्वा नासीनः क्का निगः कायायमा दयानवर्येदिदं ययार्गिनिता यीदृशीदं ॥ ४५ ॥ दिवसास्तीत्यदमेन्दुचिन्त्यति। सलोका
 वालैर्मर्कः सयन्युग्रतात्रक मायनाद्वयनायिकागिष्कः याननः यति। तस्मात्सर्वयुयत्नन काशीययः समाचरता यतसर्वकागिवाप्तुन नदृक्का पुमपुथ। अस्मिन्वक्तु
 लैर्मर्कः काशीवासा रिलायकाः ॥ ४६ ॥ जमा कप्रमरुधुय यत्यर्थं समुयाक्तिम। नतयुर्ध्वयवितर्कन काशीवासा गल यन। लङ्कायिमिद्धिना याया यदाबुद्धा यिलावनः शरुमादि
 ध्वनैर्निर्गन्धगन्धवृत्तेः ॥ ४७ ॥ धम्मार्थे काममाकाशं यन्माथे वदुहयमा अस्वर्गुहिमहाकाशी नतथा न्यक्कविता आलस्यानायिया याया मृहादिष्वध्वनालयमा अश्वमध्वि
 काधर्मस्त्वय्याच्चयदयद। यः स्वात्वात्तवादिन्या यतिविष्णुदर्शनं। यद्वयायत्रयात्तस्य ययसाकानविद्यत। स्वर्नीदग्निरुस्यार्गुत्वानायवमनादयिर्सत्त्वायासनना

५२

जया लय्येकाद्वयजनाता यक्कती अविताकाच्च तना विष्णुध्वनदः ॥ ४८ ॥ प्रदास्यर्गनयूजा र्या धूयदीयादिदानतः ॥ ४९ ॥ यदकिलोः स्फुणजये नमस्कायेः सनरुनेः दवदवमहादवगमूणि
 वगिवतिवा धूर्कटनीलके ॥ ५० ॥ यिनाकिन्गणिता खना गिगूलया गविष्णुन कप्रक किरायली ॥ ५१ ॥ मर्कमधुधिकाया अतिमिषाडायवगतात्। अश्वधर्मकथा लाया गृयवाग यवभद
 योनित्यादिधर्मकप्रका र्थातिथिसमर्चनेः शयनायकनगायध्वधर्मः ॥ ५२ ॥ दुरुगारुनः ॥ ५३ ॥ युक्कयक्यथाचतु कलयाकलयेधन। नर्वकाः अनिवसर्गा धर्मनागिः यदयद यदावीज
 विषयादानुमिकः ॥ ५४ ॥ स्वाविद्यास्फुणमोदगायिवाय्या अर्धरुलसूलगूक्का मादका माधमवृकायमीशः सवार्थो नामगदागीरुवानी सवार्थिका मानयूययदगृह्णिः ॥ ५५ ॥ सवार्थानुन्माद
 यदक काले विष्णुगणगुमकायदगात्। काथाधर्मस्त्वयुः ॥ ५६ ॥ यादयूयः काशीमर्थः ॥ ५७ ॥ सायनकयकात्रः ॥ ५८ ॥ काशीकामः ॥ ५९ ॥ सर्वसोश्चैकरुतिः ॥ ६० ॥ काशीयसुक्ककिन्नाययवा विष्णुध्वनाय
 ननतगविर्धमार्थकामामुत्तयूययः ॥ ६१ ॥ अनुययूयः ॥ ६२ ॥ सदि विष्णुयूय गस्मानकाशी सदृशी गिलाकि ॥ ६३ ॥ रिकुवा ॥ ६४ ॥ गीर्वाणः ॥ ६५ ॥ ददृगु मूर्तजमनः शरामधूयसग आर्षवदृक्कविर्कृतिवृत्तम्
 ॥ ६६ ॥ आमाकाः ॥ ६७ ॥ लियाकुर्थ मुषिकनाथे योयिरिः ॥ ६८ ॥ धृताययदद्वार्थे मृगसायनलं वृत्तम्। साद्वक्कलकोयिने वृक्काः स्वावलम्बिरिः शवर्धविद्युमृगानुदवापुनारिनिवावृत्तमायनिः
 वृत्तानिवावनलायामर्डीधिमडया। मडिर्गवीकसन्मः ॥ ६९ ॥ लाङ्कगं सुनाधविमार्कितसमाधिः ॥ ७० ॥ क दमालिकमा अधिष्ठितवृषीयृष्टं यन्मखीवद टमायनागिर्किसमासा
 क सवर्दवाः सवासवाः ॥ ७१ ॥ यद्वद्वदनाः ॥ ७२ ॥ वावृक्कयययतिवामुनिपूक्कयना सवार्थनयवध्वयथाविगमा अगीर्द्विर्नरिनः यथययक्कगमकात्राम् ॥ ७३ ॥ वासुदाय ॥ ७४ ॥ दय्ययन

[illegible]

नैनग्रहदायमदूताः यलायकसमीमात्तावद्वृत्तः। अथिदष्टककर्माती समस्तुचवगत्यकिमानतथाविहिभावकान्तथाविद्युतायथा। अथरुर्नासिमात्तावद्वृत्तः यतिवृत्ता।
मागयनसुयगत्यनंदरुनायिनदकृत। कस्यकसर्वतर्जासिद्ध्यायानिवर्गमरुः। यावत्सुतामसंख्यासिगावतकाद्ययुगानिवारुस्वर्गसंख्युक्तं प्रममा। यतिवृत्ता। अथासाजननी
लाकभनोसिजनकः यनः। धनः। सावयनिः। धामानुयर्था। गहयगिबुता। धिरुर्वंशमाहर्वंशः। यतिर्वंशः। स्वयंयः। यतिवृत्तायाः। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।
यतियनिकलंगयमायिगुम्माउस्तथायत्तुविदामुगवद्विष्टा। यतिवृत्तायाः। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।
मानयिसामागन्धर्वः। अथिसुयानिगुयनाना। अथयतिवृत्तायाः। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।
यतिविष्टगुरुक्वैवल्यगुम्मायतिवृत्ता। रायाभूतं गुरुस्वरायाभूतं गुरुस्वरायाधर्मरुलावाको रायासिक्तानद्वृत्तय। यनलाकस्वर्गलाकाजीयनराययाद्वयं। दवयिगतिथायः
दिनारायः। कर्मवार्हकि। गुरुस्वः। सहिविष्टयायसांरुयतिवृत्ता। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।
नैरुवराजन्यागिनरुलुर्नैयदिदवास्तुधनः। तथाभिगीलैर्मनर्कं गीलरुगहयगत्यधः। गहयगुत्तादविष्टगुत्तायतिः। यतिवृत्तायाः। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।
योमृत्तयियायाविष्टयर्क्यालथरुक्वविता। सायूनः। यायारुलुर्नैयदिदवास्तुधनः। तथाभिगीलैर्मनर्कं गीलरुगहयगत्यधः। गहयगुत्तादविष्टगुत्तायतिः। यतिवृत्तायाः। यत्प्रनस्वर्गसंख्यानिर्गुणा। गीलरुमनद्वृत्ता।

20

16

ययन निरुतिर्वनवायः ४ प्रामदुदायस्त्वमी। आनाश्चकवचविरे ४ सर्वकामार्थमीधवा ॥ समस्तार्थितामीर्त्वं याचमुजगत्तन। वाद्याशमसाश्चकवविष्णवकात्रका। कश्चिदेः
 लाविष्णवामा। रानमाश्चकवचक ॥ वदतस्यदयामना सुदृढिर्त्वं निवाययायवस्वरावकाठिनायवमाननिनाधका ॥ समस्तार्थमावृद्धिमनसुदृढिर्विदिगाः शुभराः ॥ तिष्ठत्वायुना
 वृद्धिमविवायमरामनिः ॥ ददामनस्समाश्चय गार्थमयस्वरावका ॥ साधयिष्वामिव ॥ कार्यविमृष्टेतिदिवोकसथयनश्चिनायत्रास्त्वाः ॥ गम्भिर्नयनारुवत ॥ ॥ वदवासउवा
 व ॥ ॥ मर्मप्रतिवागा ॥ अयं फलस्त्वय्युवापिवा ॥ यायवकवकमल्लुक् ॥ कलाकयुयास्यगि ॥ ॥ ॥ निधीस्तदयनाकाणीखलुलायामडायाख्याननामवधुथोय ॥ ॥
 याजागउवाव ॥ गताश्चननविष्णवमालाकसमनी ॥ यन ॥ मूर ॥ यावावनाय ॥ लायामडामिदवव ॥ अयिष्यववात्राह किमगममयस्त्वमाकगत्तार्थकववयमनिमाश्चनसाविः ॥ य
 नगागरिदाणावियदाहलयाकता ॥ रुवत्कृष्टिगसामर्थ ॥ सकर्थगिनिमाक ॥ कल्युद्धा ॥ अलायस्य कलिर्गयस्य वायधम ॥ सिद्धककयद्वाविससिद्ध ॥ यार्थयद्विजम ॥ किमक
 याकला ॥ लेला ॥ अदावाविनावया ॥ गदृदिसुमनगकि ॥ कगतावागुधुदला ॥ नयिकासर्वरुतानायासीदगुधन ॥ यय ॥ सकिन्नुयिर्नालमर्कतयावमाणकमा ॥ आदिखावस
 वापडा ॥ मुषिगा ॥ समन ॥ ॥ विष्णवदास्तथादयोयवायविदिवोकसथयार्थका ॥ गमाणवगकि ॥ युवनाययिगकि ॥ समर्थलाकान्त ॥ नगदृदिनिधन ॥ आरुर्त्वंकोत्रावयवसुर्ग
 वार्कसुराविरुमा ॥ काणीमदिश्वयमीर्त्वंमनिहिरुद्वर्गिरि ॥ मविमर्कनमाकवर्त्तसर्वधिवममृदुरि ॥ किनुविद्यारविष्य कि काश्चानिवसगीसताम् ॥ उयस्विनयकल्याणिमानना

72

10

6

यामरानिह। नगच्छत ॥ अथक ॥ विष्णवविमर्वायन ॥ काणीदिजाणीर्त्वंनहायदाका कर्त्तममृदयदिवाममृद ॥ पार्सकनसंसविमृष्टदृष्टीसुदृष्टीर्त्वंलविमृष्टवता ॥ अहाजनावालिगव
 ककिमर्गाकाणीत्यजय ॥ सहनेकजाणीमा ॥ गल्लुककव ॥ यमिमर्कनीर्त्वंलरुगकद्वल्लुकाकिमया ॥ रावाकवावर्त्तयय्यजाणी ॥ दृष्टेर्मरुहिविनिमयकाणीमा ॥ यायायिकिमूरभियाव्यनविः
 यियासवादर्त्तमिवायमासव ॥ ककाणिकाविष्णवदयकाणिका ॥ ककार्यमनययनिरागिदृष्ट ॥ गत्युतायगक ॥ ययानि किंयानिक्यागुरुर्त्वंलजाये ॥ काणीयकाणीकृतयय्यजाणी ॥ काणीय
 नाणीविमृष्टनव ॥ किमालर्त्तमल्लुनसकर्त्तदीयमदीयमर्वविष्णवग ॥ नत्रानत्राणीयदिहविहयसहाययर्त्तसकलस्यजका ॥ काणीमनाणीसुदृष्टेकजाणी ॥ मयययार्त्तययर्त्तगानवानाः
 ॥ विगुरुयार्त्तयदलेर्त्तजायां ॥ गंगसदागमृवयागयागम ॥ गिवाविमृक्ताममृतेकधुकि ॥ मर्काविमृकानयनित्यजकि ॥ ॥ ॥ किमिधानिविगा ॥ यलद्वा मदीयसायासरुवका ॥ काणीमा ॥ यययय्य
 डविलोकय ॥ यायायिदिवा ॥ कवगनुमयता ॥ अहाजनार्त्तलगाविराय काणीयदगुनयनिकेवग ॥ ययिद्व ॥ जज्ञ ॥ जलारिनामा ॥ कामाविष्णुलायधुर्त्तलययि ॥ नवरुवलांकजले कयू
 ॥ यायस्मलाका ॥ यगतादिम ॥ अविगलानिहोविवाधियायां काणीमनित्यकमर्त्तकिमर्थमा ॥ नसत्यथनायिवयागयक्का ॥ दानेर्त्तमानेर्त्तगयारिये ॥ काणीदिजाणीर्त्वंनहासुलया ॥ कि
 सायसादनवविष्णवर्त्त ॥ धर्ममुमृदुर्त्त ॥ वि लाकग ॥ अहिकामेर्वद्वानरागके ॥ मोकनकाम ॥ सवमाकवक ॥ काश्चानवानगगथायथ ॥ ॥ ॥ यविर्गदियथाविमर्कनायाः
 त्रविर्गदिरि ॥ ययकम् ॥ नधर्मगाफेर्त्तवने ॥ यनालीसुस्मावृत्त ॥ हिमदाविमृकमा ॥ सहावावगि ॥ जावालिर्त्तमसिदिगमता ॥ वनगायिद्वलानाणी ॥ गदकल्लविमृककम् ॥ सासयम्रायः

इकर्मकृतानि रित्यानि नवेगदुत कदगनवजायत नदस्यीत्यानुस्वर्गलाक्का माकायायकविन्दनि। अथद्वानः यायात्मा नास्तिकाविन्दसंगयः। रुनुनिष्ठधर्मेतन्मीथरु
 लसगिनः। तीर्थानिवयः। अकर्मविधिनामकनियामवेदस्यसहाधीनास्तनयाः। स्वर्गगमिनः। तीर्थयागां विचार्यः। याविधायायायतां गृह। गलागः। अविदुतसवामि साधनगः।
 प्रयुज्यते। कृतयात्राकादृश। गद्विधिमधु कयनः। आगत्यायुर्वधिरु न्याः। अकरुलरायवत। नयनीयाद्विजस्ती। (थस्वन्वार्थोऽयं) उवत्रासकुरिः। यिद्युदोर्नववत्तायायसं
 नवाकरुमृषिरिहृष्टं विद्याकनयुनवा। आर्द्रगयकरुवा मद्यवाहनवर्जितमात्रकालस्यधवाकावेगीथः। आर्द्रवगर्धमात्रविलम्बनकरुवा नैवविद्युसमाववत। तीर्थयायायुर्मल
 नघानर्तीर्थममाववत। स्नानजकलमात्रातितीर्थयागापिर्नयानुभयायकतीर्थयायस्यगमनरुवत। यथाककलदमीर्थरुवदुहात्मनानृत्तमायागर्भोर्मसलरुतयः। यथाः ७१
 गद्वि। अर्द्रतीर्थरुलतस्ययः। युमः। अनगद्वि। कृगयुतिर्कर्मिहत्वा तीर्थवापिलिमकृयत। मकृययमदिग्यसादृशार्गलरुगवे। तीर्थयावामः। कर्कवाः। निवसाम्पुनकथागिवागत
 निद्यावानि यानिमपुनतायतः। यदकितीर्थयाकिः। स्यात्तुताः। अर्द्रवासम। उयवासमुकर्कवाः। याकाकिः। अर्द्रदारुवत। तीर्थयुसमीतीर्थसम्यक्कलन्यामया। स्वर्गसाधनमवेतः ७२
 आकायायश्चवेरुवत। कागीकाकीवमायास्वालयथादानवययि। मधुवावकिकायेताः। सकययोगिमादृशः। धीलेलाभादृशः। सर्वः। कदापयितताधिकः। धीलेलायाधिकदावातयुयागमाद
 दैयवमाययागदयितीर्थयादविर्कविनिष्ठतायथाविमूकनिवर्तिनराश्वात्तायसंगयम्। अन्यानिमुक्तिदेगलि कागीयायिकवालिहि। कागीयायविमयेत नान्यथातीर्थकाटिहि। अगार्थ
 म

कथयिष्ये। मिटिहार्सयनागनम्। यथाविष्णुगलेनकं हिजायगिवगर्मात्। तीर्थयायमिर्मात्रत्वा नमानियतमानसः। अवयित्वादिजांश्चायि यद्वारुकि समचिहाना। कथियाश्मनिनतानवे
 यान्मन्मागर्दगिनिः। गृहाद्विजयूरकांश्च निष्ठायाजायकद्विजं ॥ **॥ कर्मिणी कथयनाकागीरः। सुवर्तीर्थकथननामवदायायः ॥ ७३ ॥ अगस्तिववाच ॥** मधुनार्याद्विजः। कश्चिदरुद्रदव
 मरुमः। रस्ययणमहातजाः। गिवगर्मातिविश्रुतः। अधीत्यवदाचिधिवदर्थविरुयतत्वरः। यतिह्याधर्मगामुलियनाधन्यभिगम्यवा। अमान्यस्यतर्काश्च यत्रिलाक समकनः। मीमांसाद
 यमालाक्कधनवर्देविगमकवा। आयुर्वर्देविवायायिनाधवदकृतयमः। अर्थगामुल्यनकानि यायाश्चगजवष्टितम्। कलासुवदतायासा मनुष्यमुविददः। रात्राश्चनानादगर्भानं लियीः
 कृत्वाविदगजाः। अर्थन्यायधर्मोऽयुक्तारागान्ददुया। उत्याययणान्स्वरुधनान् रथाश्चार्थविरुक्तायोवर्नसत्वरुक्ता। अर्मादृष्टाप्रिगः। कतिमा। विनामवायमरुतीं गिवगर्माद्विजालमः
 १। य०। मगः। कालस्तथायार्क्यताधनम्। नात्राधितामहगनः। कर्मनिमूलनकमः। मयानताधिताविष्णुः। सर्वयायहनाहविः। सर्वकामयुदानुर्गा। गलागनात्रितामया। तमस्तमरुवः।
 सूर्यानाद्विजावेमयाकविता। महामायाजगद्वाणी नवातरुववधदता। नवीणितामयादवायकैः। सर्वसमृद्धिदाः। उलसीवनयुध्या नदतायायगमकथा। नमयातथिताविष्णु। यामिद्वान्तेर्मधुनेन
 मेऽहंरुयिदयत्रगधि विद्यदामनतावकाः। अवदुयूरुलायताः। मेदुयात्रिधयलवाः। यथिनानाधितावृकाः। रुद्राश्चरुलयदाः। दहूलेः। मानकूलेः। थलाः। ययङ्गुल्लोः। नालकूताः। सुवा
 सिन्धुः। रुद्राश्चमनामदाः। द्विजायनार्चनादकायमला कतिवानिणी। सुवर्कनायावर्धयदहंद्विजहृत्यनम्। नालकूतामवत्सागोः। यागाययुगिवादिता। रुद्रयायायकृत्वायु सकजन्म

स्त्रियायकत्वमागता तावदेकैरुवना हिमानसमूयस्त्रिगुणम् ॥ गच्छत्येताद्विनायकश्च ज्ञानिसमृद्धिः ॥ अविष्टिर्नसकन्यानीस्त्रिगुणोत्पादयवाससाम् ॥ यामत्रययहस्तानी सहस्र
 निविष्टुगम् ॥ यद्यपीलसुणी लाख्या गतायाश्च विनाजिगम् ॥ वयुर्बुजायांस्त्रिगुण्यार्या किञ्चिदीजालमालिगम् ॥ तद्दिमानमभयसुधीतवासा ॥ अत्रुर्बुजः ॥ अलक्षकवर्णरावर्त द्विजदिव्यविरु
 वलः ॥ ॥ ॥ निधीरुचयनालकागीस्त्रिगुण्ययत्रीवर्णानामसयमाऽध्यायः ॥ १ ॥ लावागडावावा ॥ जीविगगकथामर्नायुर्ग्यय्ययत्रीगिताम् ॥ नरुकिमविगगमि ॥ अत्रास्त्रु
 मुखनिताम् ॥ मायायश्चामिकियुर्ग्यानिवर्गमहिजालमभयमृगायिमा ॥ नैवायकुहितकान्तामि ॥ अगस्त्रिगुणवावा ॥ साकामाकानवेताम् ॥ यत्रीवृषियराधिति ॥ यत्रादिश्याममर्थमिति
 हासामयाश्च ॥ अत्रुकाकविविगार्थकार्थयाययलानिनीम् ॥ यद्यपीलसुणी लाख्या केचितीनिवर्गमल ॥ ॥ निवर्गभावावा ॥ अयिविष्टुगलोयलोयलोनीकदलेकलो ॥ किञ्चिद्विष्टु
 युक्तामार्हयवदकसंयुतः ॥ ननामयवयावद्विष्टुकावकिञ्चनायद्यपीलसुणी लाख्या युवांरुविष्टुमर्थः ॥ ॥ गगाद्वयः ॥ रुगवरुकियकानां किमरुर्नरुवाटः ॥ म ॥ रुगदवहिनीमना
 यदकंथीमतावया ॥ यदन्यदयिनविरुयुष्टुर्नदगकिगम् ॥ संयुक्तमहायाक्रीत्यागयुक्तावरु ॥ निष्टुसमववर्नरुगवमदीराधितम् ॥ अग्निधीतिवर्नरुगसंयुत्वावरु ॥ ॥ दिव्यदि
 उडवावा ॥ कर्षिताकात्तुपीकः ॥ कश्चय्यजनाकृतिः ॥ कश्चमविरुगाकाना ॥ इतमरुगमायग ॥ ॥ गगाद्वयः ॥ अय्ययिगावलाकागवसन्निधिगितागिनः ॥ दत्तायुगायराजायनानाकृत्वा
 ददत्ययि ॥ निर्वयसङ्गायश्च ॥ सकृत् ॥ अविष्टुगम् ॥ अत्रुयय्ययलकाका ॥ यिगावसकश्चमसख ॥ गतागद्वयदग्गायद्वययजनाद्वगम् ॥ यिविष्टुले ॥ सुलवकं ॥ अय्यगमीननिस्त्रने ॥ लाके

नयुधिर्गता कं श्यामला केश्यला मणे ॥ गलो कथयर्गकमी का ला क ॥ यय्यरु ॥ कृत ॥ ॥ गणवूव ॥ गुक्काना मयं ला क ॥ तवेयुक्का ॥ सुता ॥ नाथना या क विरु नि गुरु य नि वय र विरु मा र्ग
गमना द्या श्व गृह्या या ॥ कट्टि चिन ॥ सखिरु च यरा का ॥ का आसू या विवर्जिता ॥ नति धिर्न ववा न ॥ र्मका ॥ आदि नय ववा ना धर्म ॥ न धर्म ॥ विद नान सदा सुखा ॥ एक मं हि जान कि क ल यू का हि ॥
या द्विज ॥ तस्मै गा ॥ सम्य यदु कि म न्य क ग द व ॥ सुट्मा ॥ समुद्रि राजा द्य गा यित नय ल्य न गुक्का ॥ गुक्क र सु र्ग सो खानि द व व द्वा क्ता र या ॥ र ता विला क या मा स ला क ला व न ग म द मा क र्मी ज ना
सु सो ला क ॥ कि ना मा व द र्ग ग ल्प ॥ गणवूव ॥ गम चर्च स्त्रे य ला का मी ग म चर्चा श्व गुरु व ता ॥ द वानां ग य ना के न वा य ॥ सु तिया ॥ का ॥ गी र क्क अति गी र न ता व य कि न ना धि यान् ॥ सु व कि व ध ना र्था ॥
श्व धन ला रु न मा हि ता ॥ ना र्क ष सा द ल द्वा नि सु वा सा सि ध ना नि वा ॥ अष्टा ष्य धि मृ ग श्री नि क र्थ ना दी न्य न क ग ॥ वा क्क ल ख ॥ य य दु कि गी र्ग म य द्वा र्ग नि ग म ॥ मु गा व व म न ह्य र्था ना द्य ग म क र ग
य मा ॥ त न य ल्य न ग म चर्चा ला क ह्य र्था वि गि श्च र ॥ वा क्क ल्प सा धि रा य द्वा गी र वि या र्जि त र्द न ॥ गी र वि या य रा व न द व र्धि ना त्रि द म र्ता ना मा न्वा वे य र्वा ला क वे र्था ग म् ॥ अति व ल्प र ॥ सु म्भू र्
न नि द ल्प रो द वा ना म ति व ल्प रो ना द नू यी गि व ॥ सा द्वा ना द ग ल्प वि दो हि नो य दि गी र्ग वि जी र्ग म् ॥ म द्वा रि रु ना त्म क म् ॥ मा क मु र्ग र्ग ल्प र्था द्वा ॥ सा त्रि श्र म थ वा क या ॥ गी र क्क य दि गी र न ना द्वा
मि य न म य द म् ॥ य द्वा न व ना र्क ल्प नि न व स रु मा द न ॥ अस्मिं ला क स दा कालं सु ति न या य गी य न ॥ ग म् ॥ ग मा ल या यू क्को द वो र्ग रि रु नो स दा ॥ गि र्ग ल्प र्था व य र्ग म न्ग न ना रु न मा गि व र्ग ॥
म धि य य दु कि र्म र्क न ग र्ग वि द म् ॥ गणवूव ॥ अस्मिं ला क स दा कालं सु ति न या य गी य न ॥ ग म् ॥ ग मा ल या यू क्को द वो र्ग रि रु नो स दा ॥ गि र्ग ल्प र्था व य र्ग म न्ग न ना रु न मा गि व र्ग ॥

सुशहमवोममवीचोयुनृतत्यगम्। तर्लसर्निलमाचर्मसियववनरथा। तावमहायातकिनरुयकेलकठारक। आश्रयाश्रयददृक्काकालेलोहयुके। सनाशमानानुयायिष्ठा नि
र्लकलीनिवासया। मुग्धगामिगुग्धमिगुग्धकूटभालियादय। उल्लस्ययविर्नकालसुद्धयादमधामखम्। खवमस्यवसर्दलेमुटयर्लमहायुग। आश्रितियुमिगुग्धया। यजावत्याटयायुवा। हा
लाकीलमहाकालमहाधाननयकर्मनियारय। यावकिनायारयतिवयर्गुयनालयम्। कालकूटवगनर्दकूटसाक्षिलवादिनम्। मलिकूटयुलाकूटकलमाष्टनिवारय। लालाविव
नदधुकेतीर्थसुष्टीविर्ननय। आमयाकवगर्दुग्धपूनायाकनगायिनमात्रमविकुयिलीवियुमिदुयकुययीयायजायीजकर्नरुयमभकूयनियारय। लालिलांयुनरुश्चविकनार्हल
यधम्। माउलान्ना। स्वनायश्चविकनार्हलायधम्। मसलालुखनेर्दुग्धदलुयेर्नयन। यनश। पूडीद्विजावमकार्द्विजायमभसविनम्। अलामखवननयकदीर्घयीवययीया। पूडीवाक
जाजगार्नवेर्धवाकलमानिनम्। कशिर्याऊकस्यायिवदविकुयिलीद्विजम्। लालालवामीसानासर्लविषमर्धियाम्। आयुधद्विकानार्नविकनार्द्विजाधमम्। यागयात्यकभायात्यवर्धना
यनलादृट। घागयकोकभाघागेर्नयर्गुयकदर्मम्। मीमिर्नय। लययाधुयुथलीकूलकलामाम। मनाययतिनासर्दककायसमयनय। स्वयंगृहीत्वानियर्मयस्यजदजितद्वियधर्गयाययः
दूनाधर्ववदुमनकीक। ल्यादिजलानुदवर्क। धुयनदूनकायम। स्वकर्मगकिर्नय। येर्द्विगतिरुयकनशययजा। यालयकीरुयगानिवनिजोनसानादलुयनिकवधर्मलरुयास
सामसद। वधर्ममाययडाङ्कनयतिष्ठननिर्जाक्रियाम्। कालनायन्ननिधना। रुयाससामसद। नेवदीनानदवर्क। नायकसामनलकवानुयर्गनाद्वयुद। रुयाससामसद।

२३

शवाकल। कशिर्यावेर्धवा। स्वधर्मनियता। सदा। मनीयियसंयमिन। संयमिर्नयवसक्ति। रगीनय। सुधवावदुययवोजययधशवजि। सरुमुजितकूकिर्द्वधवात्रियुयय। यवना। द
नवकु। नारायणनियमर्दनशकनभमाधर्मसन। ययमर्दि। यनाकक। रगतवायववरुवा। नाजानानीकिवर्दिन। धर्माधर्माविवायक। सुधर्मायिसमासत। मनीयवयवकावायनययकि
रुक्मिणशदलुयालभयकवानुदुमानयननानुक्रवित्। लालिकमाधवमकुन्दरुयमनायगामुगिवगगगिर्नयधूलयाल। दामादवायुगजनार्दनवासदव। लाकारुटायल्लिसनकमाम
नकि। गमाधनायकविषारुनीलकल। वैकल्लकेटरत्रियाकमभयुयाल। रुगभखलुयनल। मृगवलिउकगल्लारुटायल्लिसनकमामनकि। विश्वनृसिंहमधूसूदनवकुयाल। ली
वीयकगिनिगगकववदुगु। नायायलसुननिवर्दल। मय्याल। लाकारुटायल्लिसनकमामनकि। मृयुयुयायविषमकलकामगजा। पीकानकीरवसनाचदनील। लीन। लीन
नकलिवसनगिदलोकनाथ। लाकारुटायल्लिसनकमामनकि। ललीयकमधुविषाययुयाल। पीकल्लदिबसनग। कयिनाकयाल। आनन्दकधधगीधययनारुयाकारुट
यल्लिसनकमामनकि। सर्वधनगियनसुन्दनदवदववुद्धयदवगगुधजगदयाल। लाकारुटायल्लिसनकमामनकि। पीनामनायव
मधवनादवायु। रुगभमनाधविषायमधविनाथावापुनमर्दनदवीकयन। मनाय। लाकारुटायल्लिसनकमामनकि। लीनगिनीगजनीगकलावर्गसर्कसयुग। नसना
नकलिनाग। रुगभिनग। रुगभयनयनयन। लाकारुटायल्लिसनकमामनकि। लीनययदयनवसुदवसुता। कयुन। गेनवयुधरुधरुलनग। लावर्दनाद्वनगधर्मधुवीग। लाय

28

श्रवणासुधाः कुरुकुलाश्रुताननागयः शुक्लातीर्थशुक्लादानशुक्लाहिमावती। यश्चाध्वमधिकारैव नाजसूयार्थिनीतथाश्रुतानिहामिकातद्वत्तत्रययगताहवाः स्याद्यश्नसः ॥ १ ॥
 स्रंसहर्षमृष्टिसमिहमा। नमस्मिन्नस्यनालाकवसन्नाश्रुयिमुयः सदाः स्वलिङ्गलावण्याः सदाः स्वलिङ्गयोवनाः। दिव्याम्बुनादिद्युमात्यादिद्युगन्धानलयनाः। दिव्यरत्नेः सुसम्पन्नाः
 स्वच्छविभूतविग्रहाः। कृत्वा मासायवासानि स्वलन्निवक्रवयं तः स हृदयद्विहृत्वा सा नि कृत्वा देवयागः तः शान्मादिद्युलागिन्ध्याभूयलावण्यामम्यदः। निवसन्नाम्बुनालाकसर्वकामसः
 मविनाः। कृत्वा बुभानिसाप्तानि कामिकानि विभानगः। रुक्मिलेनवात्रिणीदवशायाः रुक्मनाः। यत्किं वरधृगानार्थावलनवलिनादृताः। रुक्मवृक्षात्रमकुर्तकः। दाविलाः माद्विजः। रुक्म
 विषाधितायाश्च वक्रवयं तः सदाः विभूतवर्कसहृदवालाः। नगवामलावनाः। कुसुमानिसृग्धीनिसवासश्चन्दनकथासुलोपश्रयिकर्णसुसम्पन्नाः। चानिवायश्चानिमरुताः। निजी
 निकठिनानिवासायालिखत्कवन्निस्सूलनीलनिवाविवासायस्कवाग्रानिनागवत्ताद्विजः। मग्याविविगरुवत्तत्रिणाः। लाविगानिवावदुकोः। कुकवमूनिप्रमथद्विजदम्यगी
 रागदानमिदंकार्यं। यत्किं कुमलं नवः। किञ्चायतिद्युगीयातमकसम्बत्सवधिः। कोदादिनिवमकुर्तकः। यादद्याहवर्त्तनी॥ कामभूयधनादवः। यीयमामितिवादिनी। सात्यस्रयात्रसाम्प्रदायसत्क
 ल्यमिरामना। कन्याभूयधनाकाविश्याशुकाकनविगृह्णविहृदवभूयधनं कालमालखवक्रवाविणी। गदवदुर्लभायकीनिधनं यातिकालगः। दिव्यभूयधनासरुजायतदिव्यरत्नगराकानिवा
 नमस्यनालाकस्येति। पृथ्वीद्विजायती। सोमलाकमथयाय कालनसविमानगः। यथा कदम्बकसुर्मिकिञ्चुः। सर्वतावृत्तम्। ददीयमानं किञ्च। समकाहानूरानूरिः। दूनादर्विसविहृयधु

२१
२८

स्र

२२

५२

रुमोवीनध्वं समस्तं गायमानो लयं गतो गङ्गावृणधिना लयः ॥ सुखं लयमिति निर्दिष्टं । ब्रह्मासाक्षिद्विमगम दग्धं श्रीनाजनेहं वि । किन्तु श्रीहंसयश्च रुरुनिधायिष्यते । गायत्री सूत्रं न्यागायनी
निर्वाहः श्रमिकाम् । नृसंख्या ॥ सहमानि सिद्धा ॥ सिद्धिमिहागता ॥ सिद्धिलिङ्गमिवाख्यातं तस्माद्दीनध्वं यन्मूवीनध्वं समाजा ॥ अरुणं वाक्काययदथ ॥ इत्वा विपुनस्त्वलिर्गं नार्थं यायविदहज
॥ विदूत ॥ अधनृयति नय ॥ यशवानरुतू । वीनध्वनयसादनमग आधियतिर्वर्णा । वसुदरुणवतलिक सुर्गावसुतायमाया अरुमभ्युगिकालरु ॥ आयुधमवाक्यामि यथाहिलिभिर्ताम्रिया ॥
किं ह्यमर्तिधीना विद्याविधानन ॥ हृती । वन्दुकूयजलत्वात्वा जयारुनियमं वृती । उकाहारावन्मासं मासं नकाभनारुवत् । अयावितागनामासं मासं लकाभन ॥ यन् ॥ यथावता रुवन्मासं मा
सं गकरुलागन ॥ मासं मुखिलालाहना मासं यानीयराजन ॥ यश्च गद्यागनामासं मासं अद्यायवृती । मासं कृष्णयजलरुक् मासं धसनरुक् ॥ अथ गद्यादणमासं स्त्राणियथामुसि । यत्
संभववीनर्गं यावदायाति सद्धिज ॥ तावदिलोकयावकुम्भलिङ्गं यथाधन ॥ विरुतिरुधिर्गं बालमष्टवर्षादिर्गिधुविम् । आर्केर्लूयूर्लूनेरुक् सुनकदगनकुदम् । वायुविङ्गजटामोर्लि नर्गयद
सिताननम् । लोकावाचिनयथा ॥ अविर्लूविरुहानिगम् । य ० नैऋतिसूक्तानिरुसकं सुलीलयत् । तमालाक्षमुक्तिरुक् नामकसूक्तितामूदायावनकदं लामानमास्ति नित्यं ॥ यन् ॥ उर्व
क्रेवादिनीयं समस्तं सत्यं सत्यं हंनेनानास्ति किं किं । उकावदानदिनीयायकम् तस्मादकत्वाभ्युयधमरु ॥ उक् ॥ कलुर्लीहिसर्वस्य गम् । नानाभूयश्चकूयवाह्यभूय । यद्वत्ययश्चकू उक्ताया
नकस्मात्वा नार्त्वा विनययध ॥ उक्ती सत्यं ॥ शुक्ति कायाश्च नूर्यानेन ॥ यूनस्तमृगश्च मनीषी । यदरुददियगययश्च यस्मिन् कृतं गययधमरुगम् ॥ तायलेख्यं दाहकत्वं च वृत्ती मायाराती

32

[illegible]

[illegible][illegible]

सञ्ज

[illegible]

नारिष्वनेशकपतागितयानीयगद्यदिद्वखनादिरिशजलखलनकेनित्तुसंसकाचद्वालकानातर्वांमत्प्रददसाथसमाधिसूःसकर्ममहास्वनिर्गुणिगुमापलनीयमानैसविद्वलम्। क
याविकूलदद्याथतस्माच्चकृपयादसधयसकनीत्वादधयदृष्टवांसंसमर्थितम्। निर्वृत्त्यसनिर्गानार्थकनविद्वदुयिगा। शिपूतयागिनत्कंकाधगामानननवाकृताजलानामधियगिव
रकस्यवालकशयजायतःकर्मस्यमहासागस्यधीमगशमृत्तागिवसामर्थ्यरुवगविप्रमासितशरुयगत्कनगद्वाकृप्रवणरुद्वदवगावालनलेनलंक्ष्यवद्वागंनिगुमानकम्। समर्थः
तंसमानीयसमुयादावुसन्निष्ठा। नत्वाविद्वययन्कृनायनाश्चाभ्यर्हविहा। अनाधनाथविविधगुरुकायलिविनागका। रुककल्यतत्रागम्। इननार्यदृष्टयादसा। अनायिनमयानाथरुवरकृज
नार्ककशगलनगनविद्वयगम्प्रथमनागगम्। यालनवश्चागत्यादं। गिगुरुस्तसमर्थितम्। गृहाणयसूतनयंयार्थदगिद्वनाकृया। यादिस्वरुवर्नवसकुवती। तिसकर्ममहासमाधिसमयसर्वमि
तिगृध्वद्वानधीशउमीत्यनयनयावत्युनिध्वनीविमृष्टवासम्यग्यगिनिर्गुतावत्यनगसमवद्वग। गृहीतगिगुमापकृयावैलकृगकर्षिकम्। नायादकाकयकार्यकवायनयनाकृलम्।
किष्किद्विर्कल्वकारुसमुमायन्नमानसम्। कृतयत्ताममालिङ्गजिद्यस्तन्मुखकृजम्। गगनस्त्वगधाधारंलिङ्गसंस्तुयगामुवमायकृवर्षसहमागिष्ठितयावागानिचलशआवित्रासीम
हादवमुष्टस्तलयसागगशउवावकादर्मकृहिकचयामिवनालमम्। यनर्जतमिवामस्तयथाअयिमूर्मदृशगानियकृवर्गानियुनिध्वनमिष्ठितस्थिति। कर्मस्यवर्गीगानिगामुमर्षयगुरुद
। कर्मभायितर्ककालमकृसीगृकणसज्जगमायतानयरुवत्वात्त्यमहाकालस्यसन्निष्ठा। तगर्कननयःशृङ्गायितर्कयुलियत्यवागगामगूर्कतयसधीमहावासीम्यत्री॥ ॥ कादमिवावाय

अवचनेऽर्थोर्ममलाकमहायताऽक्षरं भाव्यमिह लवायकं लुपुत्रं लुपुत्रं। यवमानं समासाद्य युता रुवति गच्छात्। निति दत्तावनायेव मस्मिन्निजलयेययो॥ ॥ गणावृत्तं शास्त्रं
 गन्धवर्गीययाऽसूयकनिबूयिगमागत्याऽयायां कृते प्रस्य प्रीमय मलकायुगी। गन्धः सखित्वमायदना। अस्या रुकिं या गतं निधीनां यमस्त्वा नां दाता रुकाह नार्चनात्॥ ॥ गिवग
 म्मावावा। कासीयनऽकीदृकरुकिं न स्या सदा गिव। यदा सखित्वमायना दवदवस्य धूर्तऽशास्त्रं। अर्थोर्मममनऽक्षरं। गणवर्गीयतां गतं यवया द्वा कसुधा स्वादु मदनोदय मकत्रम॥ ॥
 गणावृत्तं शास्त्रं गिवगर्मना रायां कृते निबूयिगमागत्याऽयायां कृते प्रस्य प्रीमय मलकायुगी। गन्धः सखित्वमायदना। अस्या रुकिं या गतं निधीनां यमस्त्वा नां दाता रुकाह नार्चनात्॥ ॥ गिवग
 मया क्रिकृता रुवऽदीक्षिता यरुदला रूपा यरुद विद्या विमलदशा वदवदा मवदार्थ वदा का वा नवस्य यऽ। नाकमाया वदुधना वदनाऽकीर्ति राजनऽअप्रियुऽयवता वदा अयन गत्यऽगस्य
 यशा युलानिधि वदुध विमलसमाहृतिऽकृता यनयनऽसाध विद्या जगह रूत्रिगऽअथ यिगत्र विरुता युत कर्मनता रुवता। आदा या दा यवदुध धर्ममायऽसका गतऽ। ददा निधुत का प्रया मेरी निध
 वका नसऽसत्ता कवा कला वा नऽसंस्माननयना दूखऽनिधुका वदना मुका दववा कला निधुकाऽसमृत्त्या वा न विहीनसु गीत वा यविना दला कान टया खलु रलुध वदुध मय प्रस्यऽप्रविना वि
 जनया सनया निधियुत्र निकमा। गृह कार्या क्रववा प्रदीक्षिता दीक्षिता यिनी माय दा तदेव गां युदुध ययुलानिधिऽसूतऽनटयत मया गह कया निविदधा नि किमा न दा तदने सा कया दिदानीं सऽ
 बहिर्नरऽसत्ता स मय द्वा विदवान गावक मनरु समा अर्थीत्या अयना धर्म दिने मिनेऽसर्म ययो। उकयुगति रना गा यता नय निदीक्षिता नान रत्न मविदुर्दुर्ल किं किदलि सदीक्षिता सवका

३६

नकमस्मिन् कृत्वा वर्धयथा गला। गृका कन विधान न या निग्रह मथा कसैग। यथ हं गस्य जननी सुर्मगुलानि धिमृदा। गस्तिल रुद्ध दया का धन रुयिगा रगमा यदि कस्य नितदुर्ल लोचमां गा यि
 अति। आद्या दयामित नित्यं यिगुत्र यक वदितम्। लाकमाया स्मित तातऽसदा वा नेर्ववा धनेऽ। वा कला नां धर्म युग सदिशा साधु स मऽसत्ता अडिया स्वनूरा ना दीक्षिताऽसामय क्रिनऽ। नितुति
 मिह या फा सुवयुर्वयिता मरुऽयत्ता दवृरु सर्म सार्ध स म प्रता रुया ग। सदिशा समना धरि वा कला वा न मा वद। गवान नूय यूयल वयसा कल गी लतऽ। डन विगति का सित्व मया आरुग वाऽ
 धिक्ती गवयती गुलानिधे साध्वी मधु रविणी। उगां सैष्ट स दृली धिह रुकिं नता रुवा धगुया धिह रुमानाऽसर्व गुल गी नतऽ। रुता यग यसा किनु जेले दवृरु गी निधे। मायुला सुतुलाऽयुग
 विद्या गील कला दिहिऽ। रुत्या न विरु धित्वं पुडा स्फुर यव गतऽ। यथा गान् यु निव मस्तनू वा कला नां कमान काना गृह यिगि यान् मल्य गान् यिगु सुविनया विमाना या जायि अय नि यदा रुवद
 ल्पति रं सगा प्रदी विहा यत गोत वृर्लि लाय कनिश्चिनि। वाल यदित मवेत दद द्या या धिग जनाऽअन नरु सिधु कि यु क दीक्षिता गस्तिनि। सर्वया दा प्रयि यानि तव वृरु कर्म विवे। मायु य विर्ण
 गनया धरु दवृरु प्रलो नि कि यिता यित नया यी यान् धरि सु नित यथी न कऽ। तदीक्षु ली न मनसा समसा की मरु धनऽ। न कर्तु स्ता गया यी रु मूर्ख दं स्य दीक्षिता म्। अहा वली यान् सविधिये न जागरु
 वानि कि। यति कर्त्तु न ये नि दिद मा। लानि दमर्दऽ। गन रुत्या जग दमर्द वरि अय सनी यरऽ। मृग याम ययुग वयस्यो र्द वा दवेऽ। सया वदा न य सने नरिऽ। काश न खलु ग यय स। गृह यय रु
 रुवीत्वा सुदमर्तिऽ। अर्थ ययुग काना नां स कर्त्तु व सना दिकम्। न वप्र त मयी मायुऽकत्र नऽयिगु प्रमिका मास्वय स्या ल्पे कदा दा य दना दनि कत्र ययम्। उकदा गदु गा न रुव ना निज मृदिका।

चि०

स्तेर्यमकिं कवेः ॥ अवादिष्यन्नेति ॥ दुर्वृत्तार्यगत्तद्विजः ॥ कलावानयुगीयार्थविशेषकयना ॥ स्वः ॥ सत्यलोचयविशुद्धः ॥ स-आस्त्रानविद्वर्जितः ॥ आस्त्रं दूतस्य कर्माणि निवर्तिमानि ॥
 नकः ॥ यत्तद्वृत्तानुवीक्ष्य मस्युत्थार्यरुवाहगामा ॥ निवर्तिमान्तराकाशः ॥ निवर्तिमान्तराकाशः ॥ निवर्तिमान्तराकाशः ॥ निवर्तिमान्तराकाशः ॥
 मासविशेषाणि वसन्तः ॥ कः ॥ गतेः ॥ यूर्ययुर्लो मोधर्मययथानवगथावयम् ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 निवधर्माय मूल्यास्तु रुवाहणे ॥ मूललक्ष्यः ॥ कथं लक्ष्यं लक्ष्यं मूललक्ष्यं ॥ अन्तर्गतं लक्ष्यं मूललक्ष्यं ॥ अन्तर्गतं लक्ष्यं मूललक्ष्यं ॥
 लादीयदगमनिनि ॥ अयनायियनाधर्मा ॥ गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 कलिङ्गनागरविता ॥ अनाविधुतकल्पाय ॥ अयद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 ययितुर्भूयनगधिवो ॥ नानाधर्माविज्ञानादिदुर्दुर्मा ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 अति ॥ यस्यायस्यास्ति ॥ अयमयावकथनिवालयः ॥ गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 नेवसधर्माय ॥ अवावकावदमानुयः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥

४०

न निवर्त्यमयिष्यन्तु गमा ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 सदा निर्वर्त्यमयिष्यन्तु गमा ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 वाना ॥ नदद्याकमनविषुसं ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 कन्दवमयुगयसायना ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 कागिकामा ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 सनाधनि ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 आदवाविष्यन्तु ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 तथाधनः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥
 अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥ अस्ति वदमल्लस्य गत्तद्विजः ॥

८५४

नायकनामिजगत्सहानिर्दयवान्पुत्रानन्दनानादर्ममल्लिकिमन्त्र्युत्तमसमूहैरकाचिनसमाविष्टः॥ निजालमासुसर्वरू॥ कलायस्यावर्गसयतावृहस्यत॥ सवेलायासौधयमदमा
 हिमशयनादितस्याधिरुनाकुशुमासिप्रसस्यवो जहात्रतनसातानां नूयवानुयगालिनीमावायमाधायिगीबालिर्वद्वदवर्षिहि॥ यून॥ नार्यकल्मानिधेर्द्विधादिजनाजस्यतस्यवे॥ हिलापि
 नयकामनकस्यनाखलुर्गमन॥ अक्षकमकदरित॥ यसात्रियरुडकलायविधिनाविनिर्मितम्॥ दीयरास्तनकनामहोवर्धनाधियत्यतमसमुकिष्कना॥ आधियत्यमदमाहिर्गोहर्गसौनि
 गैल्युगतिनारुनरहिमा॥ इरूनीविहिरुमीथमरूनी॥ एरुधीविबित्रुदमानसमा॥ धिचिगनदधिरुगिर्विहिरुर्वकमकलाविलदिर्गैयत॥ वीदरुदकलमवानुवद्वयायातिननविद्यद॥ यदनव॥
 क॥ कामननननिर्जितमिजगत्॥ यस्यायूधनायहाक॥ काधस्यवगक्ताननवकालारुनसम्भादित॥ याविह्लावनरुत्तहिन्नदय॥ कानाफवानायदकावाकपियमायानाधयदवीयाता
 यिसल्लावन॥ आधियत्यकमलानिर्वेवलायायाकायदिहाजिर्गोहिरुमानिधर्लसदसद्वर्कोहिरुकार्यमार्यवत्रिर्॥ सदेवत॥ नयदाक्षिनसगार्वांसवासरूयदुत्तल॥ नडाधयाकिरुयारु
 गृहीत्वाजगवधन॥ योनवक्त्रगिजानामयत्रमारुमहात्मना॥ उल्लुखदवदवायननगगिर्वयग॥ तथासुयुद्धमरुवद्यानैवेतानकामयम्॥ तत्तत्कालुवका॥ रुमहीतारुवद्विधि॥ निवा
 र्यनडसमनासुम्वर्लनलवर्चसमा॥ ददावक्षिनसगार्वांसवासरूयदुत्तल॥ नडाधयाकिरुयारु
 र्वसावात्ससर्करु॥ जारुमा॥ सरुगवायवानामाविद्ययु॥ तत॥ संगयमायनास्नानामूव॥ सुनारुमा॥ सख्यकहिसु॥ कस्यसामस्याथवृहस्यत॥ पृद्यमानायदादवेर्वाहतावातिसगुः

४४

यातदासागयुमात्रकाक्रमित्वागितरुसा॥ गविवायमदावकागार्वाययुसंगर्य॥ आवावयाक्षलि॥ सार्तसामस्यागेधिरामरुमा॥ कदासमूर्ध्याद्यायतागार्वयजायति॥ अवधल्ल्यकवाचामरुस्य
 वालस्यधीमरु॥ तत॥ सर्वदवत्यसुजायवलाधिक॥ अवध॥ सार्तसामयुक्ता॥ तयसकुरनिधय॥ अजगामकागीनिर्वाला॥ कार्निविल्वगयालितामा॥ गलिर्गुयति॥ अश्वस्वनामावधयत्रमा॥ गयश्वद
 यवायुर्गनिर्वर्गगीलयनूदि॥ वर्याला॥ मयुर्गवाला॥ वालन्दुगिलकंशिवमा॥ तगाविधयति॥ श्रीमा॥ विल्वलाविधरुवन॥ अवधना॥ हालिसा॥ दाविवासीमहा॥ दय॥ उवाववयुसनात्मा॥ आगीनूयो
 मरु॥ यत्र॥ अवर्कहिरुमरुवृद्धवक्षान्यविवक्षारुमा॥ गवानना॥ तिरुयसा॥ लिङ्गी॥ सैलननव॥ यसन्नास्मिहासोम्य॥ नादर्यत्वायिदियत॥ ऋति॥ क्त्वावव॥ साथ॥ मद्यगमू॥ तनिस्वनम्॥ अवयरुयत्रितानस
 स्यसञ्जीवनायमम्॥ उत्प्रीत्यालावनयाव॥ यून॥ यगिवा॥ लक॥ गावलि॥ सद॥ र्गथ॥ शुम्बर्क॥ गगि॥ लाखनम्॥ ॥ अव॥ उवावा॥ नम॥ यूर्वात्मन॥ उर्य॥ कागीनूयनमासु॥ विधयनूयनमसु॥ र्य॥ नूयागीताय
 तनम॥ नम॥ सवर्हिरुना॥ गाय॥ युला॥ नार्निवात्मन॥ सवर्क॥ यनमसु॥ र्य॥ सवर्क॥ र्त्तमासु॥ कया॥ लवनमोसु॥ र्य॥ र्कि॥ गाय॥ यनयून॥ रुल॥ दा॥ यव॥ यसा॥ तया॥ नूया॥ यननम॥ गमू॥ गि॥ व॥ गि॥ वा॥ का
 क॥ गा॥ क॥ ग्री॥ क॥ ल॥ ल॥ रु॥ ग॥ गि॥ ला॥ ख॥ न॥ स॥ र्व॥ ग॥ क॥ न॥ ध॥ व॥ धू॥ र्त्त॥ यि॥ ना॥ क॥ या॥ ला॥ गि॥ नि॥ गि॥ ति॥ के॥ ल॥ स॥ दा॥ गि॥ वा॥ म॥ हा॥ द॥ व॥ न॥ म॥ सु॥ र्य॥ द॥ व॥ द॥ व॥ न॥ मा॥ सु॥ र्य॥ क॥ र्त्त॥ न॥ ज॥ ना॥ मि॥ मु॥ ति॥ यि॥ य॥ म॥ रु॥ ध॥ व॥ न॥ व॥ दा॥ द॥ म्
 ज॥ द॥ दे॥ नि॥ र्द॥ द॥ र॥ कि॥ न॥ मु॥ म॥ अ॥ य॥ म॥ व॥ व॥ न॥ ना॥ थ॥ य॥ स॥ न्ना॥ सि॥ य॥ दी॥ श्व॥ ना॥ ना॥ र्वा॥ व॥ र्त्त॥ व॥ ल॥ व॥ रु॥ क॥ न॥ ला॥ मृ॥ त॥ वा॥ नि॥ धा॥ त॥ न॥ ॥ य॥ रु॥ म॥ रु॥ ग॥ न॥ रु॥ त॥ मु॥ त्या॥ य॥ त्रि॥ ता॥ वि॥ त॥ ॥ त्रि॥ दि॥ ला॥ य॥ म॥ रु॥ रु॥ ग॥ सो॥ म्मा॥ सो॥ म्मा॥ व॥ य॥
 नि॥ धा॥ न॥ क॥ र॥ ला॥ का॥ द॥ य॥ त्रि॥ त॥ व॥ ला॥ का॥ रु॥ वि॥ श्वा॥ ति॥ म॥ अ॥ स॥ र्व॥ य॥ हा॥ ला॥ अ॥ स॥ य॥ र्वा॥ लि॥ त्या॥ स॥ य॥ ना॥ म्॥ त्व॥ य॥ द॥ र्त्त॥ यि॥ र्गी॥ लि॥ र्त्त॥ स॥ र्व॥ र्वा॥ वृ॥ दि॥ दा॥ य॥ क॥ म्॥ द॥ र्त्त॥ दि॥ रु॥ न॥ र्गी॥ सो॥ म्मा॥ त्व॥ ला॥ क॥ व॥ स॥ नि॥ यु॥ द॥ म्॥ ल्ल॥ त्या॥ का॥ रु॥

४१

लोमनवकेवके शगुनि यलोर्मनके सुनली कृत यलोवे सुनली दवग श्री वृहत्पणी कुशा कृने न आवके वग श्वेथ सवला ले दे दान रि धा का कना ले कनवके दूवा कृत्र कृन् के यथ
कमरि कृस्मे यलोवे वयने यथि यगे गत सह मेथ सममान वर्ग कत्रम् यश्चामुगे डा मिने लो क कृत् ययत्र यथ ययामा सदवर्ग संग यथ यने वृद्धा सह मु कृत्वा विध्वर्ग वचने यथ क क
मेश समालिम्भ ग विध्वर्ग संग आ दृर्क ना यथि गी त नृत्वा यहा येथ यथ क मु गि रि वृद्धा न न्ना सह मे व न्नेथ भग्ने मु कृत्वा वग कत्रम् सह मु यश्च गत्र दामिर्क गु कृ सम वर्ग यन यदा दर्व नानूला
क मना गयिवना त्यम्भ तदा न्नि यमि धार् यत्र गरी व दृक्त्र यम्भ यदा ल्या वर सा ल्या न्ना यश्च ल्या र्थ म हा म ल म राव ना च्छा रि व स कृ दि द्वि ये सहि ग स्या हि निर्मली कृत्य ग द्वा दत्वा नर्त
यि ना कि न यथ यो क ल धू मो र्ध सह मु गत्र दामिर्क वि यथा स सा द त दा द वा र्ण न्ना य म हा ल्म न तस्मा लिप्ता द्वि निर्म म्भ सह मा र्क धि क य्नि ड वा व व वि नू या कृ सा द्वा द्वा य ली व वि श त यानि
थ य स न्ना स्मि व र्ण व य र्ण न्ना नि ग म्भ गि व व ग म्भ न्ना जन य ना द्वि कृ ड य दान नृ स च्छा र्ण ना मा यश्च कृ वि गृह उ कृत्वा कृ त्त्व उ कृ य कृ ल्म न य ना कृ ल धा मो ला व कृ नि मा य य व द कृ य ज
यति वा ॥ रा र्ण ड वा व ॥ त्व म्भ रि ना रि कृत य त सम स्र मर्क न य स्या रि म ता नि नि ग व ना ल मा द वी य स दि न म ल ग ग न रि ना य ला कृ य स्र ज ग दी य व त न्न मर्क ॥ ला कृ गि व ल म गि व ल म
ह म हा रि निर्म म्भ सि को मृ द म्भ स म ल्म मृ द म्भ वि डा वि ना खि ल त मा स स्र त मा स ग मा दि मो ग्ग यी यू य धू य य वि यू नि त न्न मर्क ॥ त्व या व न य थि स दा ग नि न य्थ दा स्र कृ ल्म वि ना यु व न जी
वन जी व नी हा कृ च्छ र्ण न वि व र्दि त स र्व ज ना स ना वि ना रि कृ ल स र्व ज ग न्न मर्क ॥ वि ध्व क या व क न ना व क या व के क ग क र्म त म्भ क व ना मृ ग दि श्च क र्थ म्भ पा नि थ हा ज ग द हा ज ग दा कृ

20

नु

शेवमुतायगणीविनाममयहंसमासायप्रतीविषयस्यह।अयूनवृद्धदहस्मयश्विमकगनूयज।विनासाखनयागनविनानानावतादिरि।संस्कारलिर्जविधिनाखनामाप्त।
 कश्चनमायाश्चमृदमहास्मनकम्बलाश्वनारुने।कालदशानवरुजायावदस्यगणीयत।विनिर्गयोतयस्मावरुनरुमहात्मना।मृताःसावकनामासोसर्वलाकषणीयतगस्यउक्षामः
 हादवाययोयहयदमरुता।असावकवउथायिस्मात्वालममहामुसि।अथश्रीसावक।ननमस्यानिनारुमा।नरुयायहवीशवकदाविदयिजायतामसावकसंयुक्तवउथोलखन
 यदिउयत्रागसमयवृत्तदूर्ककालवदिरि।तस्याचूर्कदूर्कजर्कसर्वमुवतिवाक्यम्।यद्ययाप्रदयायवेवउथुसावयागन।तयोचिरुर्गारुविताहकिर्दगवायिकी।असावकवउ
 थारि।युनाजर्कगलाश्वनश्वनवउतयवृत्तशार्कयुयसमृद्धय।नकयुकुवतीगणसमृद्धगलनायकुमाकिश्चिदत्वातदृदि।नविद्येनरुिहयता।असावकवरुकायवावागस्योनारु
 माभनस्मिन्नासावकलाकवसकियनमर्द्धयथा॥॥अगस्यउवाव॥॥कथयतानवर्जसायुवावतीकथाम।रुगवरुलयाः।यायनगानिर्गुना।युनीनगानचक्रीदृष्ट।निवगमा
 थाम्युनीमाययवायवयस्यकस्यययूननरुमा॥॥गवावउ॥सखसखसमाख्यावानानाख्ययनवायतश्वधवदायनादाययखनस्याः।युनःकथामविधिर्विधिसुतः।युर्वि
 लाकिनवनीमृदा।अविनाशःसताःसकमानसाःसस्यसन्निराधमनीशु।मिनामृदाःसर्वसृष्टिषुवर्कका।युगायनमजिप्रसक्तयुद्धवसरुमशसुग।मिनानामवृद्धाविवधसरु
 मशाननादाकाजितका।मृदवादिर्मलागयशवदवदार्थनवरु।कलासुकुगलाःमलशायनदृष्ट।उसर्वर्ग।मृतानीतिविरुम।हितायदृष्टाहिनकृदहितानिहिनःसदा।नूयवान्

४२

10

6

नीलसम्यन्ता।उलावाचगकालविता।सर्वलक्षणसमृद्धसमृद्धागुनवत्सल।तनायतायसीवृत्ति।काथीसमहतीचधनामरुत्तिर्जयुनिष्टाय।मृवृत्तिरावनश।अयूनगवदादिर्वादिष्ट
 गजामहातयाशतगयसन्तारुगवान्।विल्व।विश्वरावनश।अविर्बुयगतालिमा।महसां।गिप्रवृती।यसन्नास्मिन्वर्कहियरुगनसिवर्कत।रुगिगमुसमा।लाकृउद्धवसागिह
 वान्॥॥अजिप्रसउवाव॥अयनकनगा।कनगा।अनूयनविनाशदसर्वदगवृत्तुय।गुविदरुगृहीतमहायदुत।रुगरुकजनादुतनायगत।रुत्सर्वददस्यववदनननगवृत्तिनमः
 हावलदारुकुत।कृतविविधवनिगयविगननागनूविगिखविगा।यलधेयनिध्यानिधनादिविदक्किरुकुगननिहन्।कृतविहितमनायधयन्नगरुता।नगरुत्सुतायितवामवयुः
 खवयुःयनिपूत्रिसर्वजगत्॥गिजगनायनूयविनूयसदृकसदृग।लकृलकृलकृगुका।रुवरुगयनयमत्थेकयनयनितस्ययिदरुकनयसृत्॥सुसुताखिलरुतलसम्वनग।युलव
 धनिशोधसुआधुधन।धननाजकुमात्रिकायायनयायनितः।यनिउद्धनतास्मिन्निवागिबदेवमहगणिनीगविश।विरुवयुदगिनिगनिवगमृत्॥मृत्तयायुयतिलकजगतिगयकृगयनुग
 रुकिविद्यातकृताम।नरुकेतोतनयविरुमिरुप्रुरुता।गुमहायममायमन।नमताकनमन्यदवेमिनिर्वगिबयादननः।युलनास्मिन्तश्विततः।अजगत्खिलघरुवेरुवतायलसव
 यर्गुलवता।युलहीनमहीनमहावलर्ययलयाककमीगनतास्मिन्तश्विततः॥॥रुगिह्रत्वामहादर्वविनवामाजिनः।सुगहा।वतनचमरुगानः।युत्वाउक्षाववाचकून्॥॥श्रीमहेश्वरउवाव
 ॥वृरुतागयसाननवृरुताम्यगिप्रश्वरु॥नाम्नावृरुत्यातिनिगिह्रत्वाह्रवदिज।अस्मास्मिन्वर्जानाविल्यगीवरुतासिमयनश्वनागीवरुतिरुगानिगिबलाकषयास्यसि।वावीययके

जनयिषिसुनीकमृष्टवाक्यमनाकूलम्। नावालङ्कितमत्वा मा मवर्मस्तु यस्मिन्नि। यशरुमानवर्तल। जातास्म्यत्यकयावन। इहानयादहनयस्त्वदीयादयसमुव। नयनवदिवन्मात ४
 कात्रलसर्वसम्यदा मातरु यसादिनविद्धि यनमनोर्दयासदमावकमवहिसाहाय्यं कृन्मा नयनवितामूनरुमागयानेव। आनीर्विनरिनचयासायिरुत्तामहावीयां कुमारं कृदिसमुवम्
 मरुत्तात्ताहसम्यत्ता नाजमानमवावरुमा। अनुरुर्नगकाहं त्वामूलनगया मज्ज। साहकवर्षदगीयं तथायिकथयाम्हाहमासयतीवा कुरुत्ताहि विन्नमरुजिमहदि। गववाशोद्यवाः
 नीलि नकिठकि कनामिकिमा। तानिमन्नगमा। नने मुवन्नाविवर्गणि। मा मुवकीयविकीर्यकि कृत्तिलजला। किला। त्वदकननयाताग त्वदाधने कजीविका। लव्वासिकनिरि। कष्टे वि
 हा। र्मयार्थदवता। त्वन्मस्वदयगा क मन्मनः कननी वाधि। अनदययसायू। कृष्टवृद्धा यत्तारुवक। त्वदममममममम सुखसद्धारुणी कला। सुखगयस्वगयन यावृत्तयलका मन्म
 मा त्वदास्योत्तयूट कद्ववादि विवदितामा। सुधसुधसुधवदन धयन्नाधिधिनमिना त्वदीयः। नी कला लाये। प्रायकं नि यथेयदा। सयतीवा कदवथ सुदेवस्य। त्ववयथ। यदा मनिदासि वि
 न्मययस्मि तद्वलरुमा। कदानिडा यनिडा सो रुविका कदयेवुवन्। यथायया गृहवत्सु खलित्वा वालखलने। कदानद्यार्घ्या मलुहं सुनोस्मातामिवा नूखी। यदा सोवादि निर्याया। यद्यपः
 खाकिर्तवदमा। यावन्नास्या शिया मूर्ता। कदा कदवल मन्मनमा। यथायथा वहियासि यशुजिउर्येयदम। तथा तथा ममया। कष्टयायुलकी रुवक। विगयुगत्वयनि यायुं ममानसा। लुज
 शसुधाधनाधवाकावे वहिषि नयति त्वया। अथनिष्ठनु केठिना। यावः। कष्टवटी नट। नयस्य ना मिसकका सुयसत्तयि यास्यति। त्वन्ममनूयाय जननी वयममृजो। कर्लीमोले

३४

मज्जाल जणी कृत्वा कुर्वययो। तथायिधेर्यसुगसनीत्यायनियु म्भवा नश्ची वन कामात्ता। कुवस्या यायनी कृता। माशरुत्ता मन्मकार्थं कदा कदनगी कृता। शयनेन वा र्ययुसना। आनी
 ब्रदा। यनः। गता। त्वसोधास्मविनिर्गत्वा लावालयना क मश अनकूलनमहा मा दर्शिताश्चाविगदन मा समनूरु न्गा खपु प्रसावमिषयसः। कृता कृत्तिविये म्भवेन वनमाविता। स
 माहदेवताहिरुः। कवलनाजवर्त्ताना नवदकाननाधर्न कलाद। ओनृयात्मजः। यावदनील्यनयनयूनः। यथासि स कुवः। गावददगसकधी नरुक्तिगगी न्वन। वालिणयसहायय रुवका र्यस
 हाकृता अनृया न्यायलालरुत्ता रायादि कायलमा। कनाजकनयावाला गरुर्न कवतदन मा। वलात्ससात्य कृत्वेन मस्करु विरुत्ता। यस्यायगाहिताहावीं। एरुंवा एरुमवव। आहृया राविनी
 नरुत्तस्य गयुदग्यरु। अथथा विदध्याय मानवावृद्धिने रुवात्। रुगवत्या रुविशा सो विदध्यादिधिनयथा। नवयानववेविर्गु नविर्गु विविधिरुमा नवलनायमः। र्यसो कानलीयकृ
 र्ने कृत्तमा। अथदृष्टा ससकधी न ससकसककिरुजसः। राय मूणे विवा कृत्ता यनी कानूयममा दह। किल काकिरुसहा लान कृत्ता यगहिता मुलीना। कृत्ता जिना यनिष्ठां यरु मूणे नर्ल कृत्ता न
 साकृ मृशकनानुकि छिदिनिमीलितलावनाना। सुधो कसूकका वाय वासः। यावन्नाचिमाना। अका। लुयिमहा राग। मिलितानु सकधी निधीन। विर्गु वियदिनिर्मना। इदिधीर्निवयुः
 जा। डयागम्य विनमोसः। यवदकनसम्यः। कृत्वा विरुत्तयया कृत्तयलम्य ललिर्तववः॥ ॥ कुवडवावा। अवेगमी मनिववा। सुनीत्यदवर्सरुवमा। इहानयादहनयं कुवीनिर्धि मानसम्
 ॥ अहं बालविगा लाक मरुनाज कृमानक। नदृष्टा र्स्वर्लवाल् सहायमधना कृत्तिमा अनर्च ननययय न्मदगमी नराधिना। इयायवयगिधु के यावृत्ते विस्मिता रगमा। कृदवनमनूयाय

म२

20

16

पूयलमदिप्रचयिदुजम्। अन्नकपूयः। याताल। गगननकसंकक। उकायनकनीयाता। पूयरुदेननकके। दवय्यावसविली। दवानावसमिहिस। सवासदव। सर्वगदीवाद्यासना
 वभत। विद्युत्वाद्या। विद्युतावयसार्थकता। मता। विद्युनामसपूर्योह। सर्ववायनगीलिनि। सर्ववाश्रद्वीका। मी। गनात्यमध्वन। द्वीकगल्लिखाता। यः। ससर्वसंस्ति। तथानवा
 वनाधियरुका। मरुमियलयसर्ग। अतायुताखिलताके। सजक। सर्वलभाय। दववावरीविश्वयावरुवसुलीलया। द्यास्वपूयसम्यत्या। सागविश्वमुनाखिलम्। कस्यक। लसमी
 कतना। द्वादिमुयदादक। निनीश्रु। यूलुनीकाको। नान्या। नियमता। कत। नान्या। गद्यहोमस्य। गतो। गद्यहावयि। विनामृकच। गविच। दामोदववधुर्ज। गविचववलाज्या। गविचववला
 नर्वा। नयथ। कने। लम्बिता। गविचकाकिमी। मस्या। नायकर्म। कयो। कयो। निर्वर्द्धववलाद्वर्द्धनमनामनरुद्र। द्वादिवा। नानननसर्वनिश्चलत्वमवायह। यवलो। विद्युग। गलो। दित्वा। नायाय
 लङ्गलमा। मस्या। नाववका। नृववका। विपूलकय। वाणीयुमाणी। कियत। गविचगुलावर्द्धन। विद्युववस्ति। कस्तनमहासा। रयस्यता। नितार्ककमलाका। कनामध्वर्यसुधावसमावसय
 कीननसता। तस्या। नावससंस्तरा। गीमृकचयद्वेद्वयद्यामादपुमादितमा। यथा। कर्बननतद्या। गस्याविजिघृक्षणीयुगम्। द्वागिद्विर्यमध्विया। यविस्वययद्वयम। सर्वस्यसिखयायक
 स्यरुजानिजनामन। गद्यादिविषया। अयं। सार्धमादवयवम्। कुवद्वियालिर्गोया। कृताथ। न्यरुवक। दाल्फानि। सर्वतर्जसि। कुरुमेयेयनादय। वद्वसुर्वा। नल। कर्त्तव्यदीवितजगद्वय। वद्वव
 द्वाविचववला। समीपलाधनाधिय। यमनिर्ममिस्वा। यजाता। द्वायदफाकिता। वेमानिका। कथा। यववसुम्खादिवो। कस। रता। कुवात्समृद्वय। द्वाधिका। नेधिताधिय। ययययकुव। ययद

313

10

6

मिनाकियुधिदीगला। तना। तस्यारुवाका। ना। विनमरुगमगवे। अहातदमसमीनि। खका। गार्थजग। न्याधि। वसवकियदस्त। नित्यवन्नायितरुयाह। यावनिविश्वकर्जसि। सिद्धिपूयगुलानि
 वानेशकिथीनितावकि। कुरुयस्तजसारुवना। अहानिजगुल। द्वायर्ग। सतर्कमातनिधना। दूवदगा। कप्रस्त। यि। गत्यर्गविषयीकृत। द्वायान्नायिगद्युलिना। कुवानाधनमृदिना। गद्यजागल्ल
 लवाधिरुत्कर्त्तु। गवलीकृत। द्वायान्नाधितान्दिवसं। सतर्कनेयधियस्तिरि। कयउवयर्गमन। गविचार्थि। कमानसय। कोमुशहासिद्वय। द्वायर्गकोलायवासस। द्वायान्नामयविश्वर्गनेदि
 नृयसूनना। गवत्तमाकिहमी। विका। कालयाहयाह। मत्यदवदकाद्वि। द्वायदनिर्धयकुर्वकुव। सतर्कह्ययवाव। ननियर्कयमिर्नायमान। सतुयूनिपुरुवकि। नागवालकनामिकिमा। कयलिनी
 तयाहर्द्धोमत्ताहायकात्रिलो। कामका। धो। नगावसिन्। पुरुवर्गगिलो। कुवा। उकउवकिलायाया। बालमयुरुविश्रानि। बालत्वाहीविमारीते। कयत्यकत्यसो। कुवम। द्वायनिनिश्विखरुमाली
 धययामासवासव। रुक्षुकाकावसर्वा। मकुलम्बाणि। नाधन। कश्चिद्द्वर्गदगन। मयध्वयुमर्धकमार्तयायुवदन। कश्चिद्वादायविकटानर्ग। द्वायान्नादरुसंस्तेर्न। मरुर्नर्जनसमखग
 तावया। मांसर्कयुक्कनुकश्चिद्विकटद्विक। ययायुमरिदडावद्व्यासकुरुयनिवा। अकिमी। द्वायिवालागे। कृतान्नाविदाययना। खनायेर्द्वयनूहमि। महाकाश। निगर्जितम्। कश्चिदि
 यन्नामीवरुटावाययानक। अकिलालदिनसनयसुर्निकवावरुम्। कश्चिद्वमदिवाकाय। कियन्गृहायकागिनीनाला। मूलकागिगयन्। द्वायसनुवगाहमायुयाह। कश्चिद्वादाननालीह
 खर्द्धनद्वमसत्रिरुम्। विगद्वनूद्वयंरुका। वाकास्यस्तमलीययन्। भोलिजेनगसंरुर्ध। कुर्वदीर्घकृणदन। निमययिदनयन। कश्चिदीवयतिस्मरम्। कयालर्द्धयलिर्द्धनास्या। वामरुसकयाल

३८

व३

[illegible]

खंरुलंगायामृदकिरुम्। पुलंगामालितावर्कस्युण्वर्नयभाहटा। गायामृदुलसीर्गव ४ गलयाम ४ सवकुका ४ गृहधियस्ययत्नेव तस्ययायरुयंक ४ यमदुर्ला ४ कृत्वायव्या ४ काष्ठाया नि
मवक ४ मरविष्मृत्तया तास्तनययमनस ४ कृताकर्तृवर्त्ममिस्तुलिरुसदृशं कालम्। मरुगीयारकानां वनागिस्तुलायम ४ कृत्वा ४ गायविर्दयप्रमानर्दमकुर्दमधूसूदनम्। त्यक्त्वा न्यनेदः
मानामिनरुजामिस्मयामिन १ ननमामिनवस्कोमिनय ४ मिहिवकृत्वा। नस्यु ४ मिनवायामि ४ गायामिनरुविस्मिना। सुलजलवयागालयवतवानिलनल। विद्याधवासूत्रसूत्रकिन्नरः
वानप्रनत्र। तलोके लावयाया ६ गयुत्तललासव। सर्वग ४ मलंगर्तवीकृपीवत्सवदसम्। सर्वग ४ दयावास ४ साक्षात्साक्षीत्वभवहि। वहिबकर्विनात्वा नु यद्यन्यवशि सर्वगम्। ७
त्यक्त्वा विप्रयामासो जितगर्मनूकृत्वकदा। दवाधिरुगवान्विष्मृत्तमवावयसन्नदक ॥ ॥ पीविष्मृत्ताव ॥ जयिवालवि ४ गलाक ४ वकुवमकनघा यविष्मृतामयासम्यक्कवकृत्वा मनात्रथ ४
मृत्नाहवकिरुगानिवृत्तनसमरुव ४ गदृष्ट ४ कर्तृसूर्य ४ सूर्याधवाकुवधिरे। कागि ४ कस्यसर्वस्य ४ रुकाद ४ समनक ४ गगनशुभगानित्यं त्वमाधाराविष्मृति। मधीरुगशुर्वेस
वन्वाययागेविष्मृतिगान्। आकर्तृगत्यदीकिष्ठनू ४ मयनू ४ किवा ४ मगान्। आनाध्यामी मरुदर्वयनायदमिदमया। आसादियरुदगुरु गयसायुक्तियादिगम्। कविष्मृत्तुयर्गयाव ४ कविष्मृत्त
कर्तृकुवगिष्ठनिलमुर्वेकर्तृयदमगत्युगास्यसि। मननानायियत्याधि किमन्ये मर्मानवेकृवा। गत्यदीविहिर्गयद्वे ४ कायेनयिद्वर्तुम्। मृत्नान्वा नानुययन्मिस्तुवनाननगाधिग ४ सुनीतिः
विरामागालत्समीयवविष्मृति। ७ दीक्षयवर्गयम्। यविष्मृति समाहि ४ गि ४ मन्त्रकृत्वा यार्गयास्यति संकयं। नरस्य सदने लक्ष्मी ४ यवित्यक्तसंगयमानजनना विष्मृगयनवध